गुरु शिष्य का रिश्ता एक विशाल परम्परा: -प्रो. वांगचुक दोर्जे नेगी, सारनाथ।

आषाढ़ी पूर्णिमा के अवसर पर संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, अंर्तराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) व सीआईएचटीएस के तत्वावधान में रविवार को केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के अतिशा सभागार में धम्म चक्क पवत्तन दिवस रूप में मनाया गया। सूबे के कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि गुरु शिष्य का विशाल परम्परा हजारों वर्ष पुराना है।

आज का दिन वैज्ञानिक व कुछ खास है, जिसे बुद्ध ने चुना। कहा कि बुद्ध ने समाज के लिए ज्ञान प्राप्त किया। इसलिए इसका विस्तार होना चाहिए। ज्ञान के विस्तार के बुद्ध ने सारनाथ को चुना, ये बड़ी बात है। गुरु शिष्य की परम्परा व ताकत हमारे पास है।

इसको विस्तार देना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।, कहा कि गौतम बुद्ध के पास राज, परिवार व बच्चा था। लेकिन उन्होंने छोड़कर अपना जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया। यह परंपरा केवल भारत की धरती पर ही दिखती है। अपनी सांस्कृतिक विरासतों व परम्पराओं को आने वाली पीढ़ियों को बताना होगा। इसे सुरक्षित व संरक्षित रखना भी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया के जनरल सेक्रेटरी भिक्षु आनंद ने कहा कि बुद्ध के विचारों को आत्मसात करने से लोगों में प्रेम व भाईचारा की भावना जागृत होगी। ईर्ष्या द्वेष त्यागकर बुद्ध के आचरण को धारण करने से आतंकवाद व अन्य वैश्विक समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के कुलपति प्रो. वांगचुक दोर्जे नेगी ने कहा कि बुद्ध ने विश्व को शांति का पाठ पढ़ाया। इसके अनुपालन से लोगों में विकास की भावना जागृत होगी व वह समृद्धशाली हो जाएगा।

इसके पूर्व तिब्बती छात्र व बीएचयू के छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. रविन्द्र पंत ने किया। इस मौके पर संस्थान की कुलसचिव डॉ. सुनीता चंद्रा, उपकुलसचिव डॉ. हिमांशु पांडेय, भिक्षु के सिरी सुमेध थेरो, भिक्षु सुमितानंद थेरो, डॉ. रमेश चंद्र नेगी सहित आदि उपस्थित थे।